# भजन

मैं अंगना तुम प्रीतम, तुझपे हूँ मैं अर्पण
वाणी से मैंने भेद यह जाना,जाना है वो निजघर

1–सूरज से किरनों का रिश्ता,दीप से ज्योति का
रूहों से तेरा वोह रिश्ता है,सागर से लहरों का

2–तूं ही साहेब तूं ही सतगुरू,तूं ही प्राण मेरा
युगल स्वरूप की प्यारी चरणरज,है संसार मेरा

3–तेरे ही बल से देखूं सुख दुख,तूं है मेहरबां
तुझको भुलाकर पल न गुजारूं,छूटे सारा जहां